Chapter 7

DISCUSSION

We have already one old Classification System in Hindustani Music as (1) Shudhdha (2) Chhayalag and (3) Sankirna. i.e. pure shadow and Complex / Compound.

Mishra Ragas may be put in third category i.e. Sankirna.

Mishra raga can be created after mixing two or more than two ragas.

Two major factors must be kept in mind while creating mishra Raga. According to Prof. Sh. N. V. Patwardhan

रागमिश्रण की प्रक्रिया बुद्धिप्रधान आनन्द का निर्माण करती है । दो या दो से ज्यादा रागों का मिश्रण करता समय दो बाते ध्यानमें रखना आवश्यक है :-

(१) मिश्रा राग के घटक रागों पर पूर्ण अधिकार होना ।

(२) उन घटक रागों को योग्य तथा प्रभावी ढंगसे तोडनका चातुर्य रखना ।

Meaning That

(1) Total control on ragas (deep knowledge and study) which are going to be mixed to create mishra raga.

(2) To have an ability, the intelligence and creativity to mix those concerned two or move than two ragas.

मिश्रराग का रसग्रहण करने के लिये सुननेवाले श्रोताओं से संगीत विषय के ज्ञानकी एक विशिष्ट समूह (दर्जा) गृहित मानी जाती है । सामान्य श्रोता मिश्रराग का आस्वाद नहीं ले सकतें हैं । (३)

"To receive the full Enjoyment while listening a mishra raga a certain level of music knowledge of the listeners is expected. A general or common listener may not be able to get that enjoyment"

i.e. Raga Puriya Kalyan

A listener should have a certain level of knowledge of Raga Puriya and Kalyan. (3)

"मिश्रराग को सुनते समय श्रोतावर्ग वारंवार आश्चर्य का अनुभव करता है और वही अनुभव आस्चर्यजनित आनंद का सृजन करता है । श्रवण के पूर्वानुभव के आधार पर श्रोता कलाकार से एक विशिष्ट दिशा की और गतिमान होने की आशा रखता है । लेकिन इस दिशा से भिन्न वैचित्र्यपूर्ण रचनाओं का प्रादुर्भाव करके कलाकार अपने कौशल का परिचय देता है तथा श्रोतावर्ग को विस्मित करता है । अतः आशापूर्ति की वजाये आशाभंग की मिश्रारोग के गायन-वादन से निरमित होनेवाले आनंद का प्रमुख करण है" (२)

While listening the Mishra raga listerners feel some surprise pleasure when performer performs such phrases which give an intellectual pleasure, to the listeners. It gives more pleasure when listerners listen some unexpected phrases. This unexpectation creates an intellectual pleasuer to the listeners while listening a particular mishra raga.

i.e. Desi Bhairavi

(सा रे म प ध म प रे ग् सा रे नि् सा रे् सा)

Desi: सा रे म प ध म प रे् ग सा रे नि् सा

When a performer combines above mentioned (Desi) phrases with Bhairavi using रे ग् सा रे सा or रे ग् सा रे नि् सा definately listerners will have unexpected pleasure after listening combined phrase.

"रागोंका मिश्रण करते समय दो या दो से अधिक राग एकत्र किये जाते है । परंतु ऐसे मिश्ररोगों के स्वरुपोमें एक ही राग विशेष ढंगसे चमकता है । मिश्ररागोंमें प्रबल राग के स्वर विस्तार पर दूसरे राग - रागोंकी कलापूर्ण योजना की जाल हैं । इस प्रकार मिश्ररागकी उत्पति होती हैं । अर्थात् मूलराग के सौंदर्य को न बिगाडकर उस में अधिक सौंदर्य किस ढंग से लाया जाता है इस बात की और कलाकारों का सदैव ध्यान रखना चाहिये ॥" (५)

While Creating mishra raga the Creater mixes two or more than two ragas but the tonal structure of Swaroop of one of the ragas which is used for a combination is always prominent. And the other Ragas are intellectually and aesthetically mixed with such prominent raga. The creater or a performer has to elaborate mishra raga without causing any harm to the prominent raga. This is a basic fundamental principle for the creation and performance of a mishra raga.

"जिस प्रबल रागमें दूसरे रागको मिलाकर मिश्रराग का निर्माण किया जाता है । वह प्रबल राग मिश्रराग के आरोह - अवरोह - पूर्वांग या उत्तरांग इत्यादि में एक अथवा अनेक जगह लाया जा सकता है । इस दूसरे राग का उठाव निश्चित स्वर सें ही करना पडता है अथवा आरोह अवरोह या पूर्वाह - उत्तरांग में किसी एक ही विभाग में उस राग का विस्तार करना पडता है । इन सब नियमों का उद्देश्य यही रहता हैं कि प्रबल राग की प्रकृति की हानी न हो तथा दूसरे राग से मिश्रण से निर्मित नवीन मिश्रराग रचना मूल राग के रसानुकुल और श्रवण मधुर हो ।"(५)

As we have discussed in point No. 4 i. e. each mishra raga has one prominent raga which can be combined with other one or more than one raga. The particular prominent raga can be elaborated (While its (mishra raga) performance) at any place like in Aroha, Avroha, purvang - uttarang but other combined raga / ragas with that prominent raga of the mishra raga have fixed placed or fixed elaborative places either in Aroha-Avaroha purvang or in uttarang.

This certain fixed pattern discipline must be maintained to avoid any aesthetically harmness to the particular mishra raga. It has to elaborate in such a way that it can create aesthetic and intellectual pleasure."

"मिश्रराग में कोई न कोई एक राग सदैव प्रबल रहता है । प्रत्येक मिश्र राग के अनेक अथवा कमसे कम दो स्वरूप हो सकते है । क्योंकि प्रत्येक मिश्र राग स्वरूप अपने प्रबल राग कौन सा माना गया है इस बात पर ही मिश्रराग के राग स्वरुप का निर्णय होता है । एक बात सदैव याद रखनी चाहिये कि राग स्वरूपो में से रागस्वरूप रसोत्पतिकारक, विस्तारसुलभ और अधिक श्रवण मधुर होगा वही स्वरूप श्रोताओको प्रभावित करेगा ।"(६)

As we know that all Mishra Ragas have one prominent raga. Each mishra raga may have two or more than two different tonal structure (htdäJÁv)because each Mishra Raga depends on its prominent raga. So that which is the prominent Raga is accepted for the particular Mishra Raga ? On this basis the total (final) tonal Structure is based. Or on the basis of Prominent raga the whole tonal Structure of the particular mishra raga is to be decided. But among the all tonal structures only acceptable tonal Structure will be

- Which has emotional value

- Easy for elaboration (रागविस्तार)

- Gives more pkeasure both aesthetically and intellectually

"किसी भी एक राग के स्वर कायम रखकर उसके गाने की बजाने की पद्धति मात्र दूसरे राग की होती है । उ.दा. मेघमल्हार राग में सारंग के स्वर कायम रखकर गायन-वादन मात्र मल्हार राग के अनुसार की जाती है इस प्रकार मेघमल्हा की उत्पत्ति होती है । ऐसे मिश्ररागों में दो रागों का ढूँढ निकालना कठिन होता है । क्योंकि स्वर तो एक राग के होते है परंतु उनका चलन दूसरे राग के अनुसार किया जाता है । इस प्रकार दो विभिन्न राग दर्शक स्वर-रुपों का अभाव होने के कारण ऐसे मिश्राराग शुद्ध राग को स्वरूप प्राप्त कर लेते हैं तथा ऐसे मिश्र रागों के प्रकारों में दो भिन्न रागों को ढूँढने के लिये सूक्ष्म निरीक्षण की आवश्यकता हुआ करती है ।" (७)

When the particular mishra raga is performed in which the swaras of any one raga is Used but they are performed in such a manner (or pattern) that it gives a picture of a mishra raga.

i.e. Raga Megh malhar

It has a total raga Sarang Swaras but their chalan is in such a pattern that which two ragas or more than two ragas are used for combination is very difficult to find out. Such raga creates an impression as it is a pure (शुद्ध) Raga but in reality it is the mishra raga.

For to understand such creative Phenomena very minute observations of a raga is required.

"मिश्रितराग तथा प्रबल राग एक दूसरे से भिन्न होने चाहिये । ऐसा करने से ही उस राग स्वरूप का मिश्र राग कहा जा सकता है । अन्य था [illegible] स्वरूप (वर्णन) शुद्ध राग का एक भ्रष्ट स्वरूप जैसा होगा ।" (८)
उसका

The prominent raga and other ragas which are used for combination of mishra rage should be differant from each other then and then only it can be said as a mishra raga. otherwise it will be a destructive / damaged deteritive tonal structure of a pure raga.

"जिस मिश्रराग में दो रागों का मिश्रण प्रगट रीति से किया जाता है व दो राग एक दूसरे के पोषक होने चाहिये ।" (९)

"When two Ragas are used to create Mishra Raga they should be complementary to each other not harmful to each other." (9)

e.g. Chhya Jayant i.e. Combination of Raga Chhayanat and Jay Jay vanti

Common Swars (Phrase)

रे ग म नी ध प

Both Chhayanat and Jay Jay Vanti have almost common swaras. Both have Common Swar Sangatee.

i.e. प़ रे - Jay Jay vanti

प रे - Chhayanat

(स्वर साम्य)

Both are night ragas (रात्रिर्गेय राग)

(more in Chap. 6 some newly created mishra raga)

"जिन दो रागों के स्वरों के विश्रांतिस्थानवादी, संवादी इत्यादि बातें समान हो और कम से कम एक स्वर ऐसा अवश्य होना चाहिये जहाँ से दोनों रागों का विस्तार आरंभ किया जा सके । यह संधि कराने वाला स्वर वादी संदी होना जरुरी नहीं हैं । 10

Ragas which are used for creating Mishra Raga must have some common factors i.e. common Vadi Samvadi Pauses (न्यास) etc. There must be one note / swar of which can be used as a counter point or Turning point for to change the raga.This counter point / Turning point Swar may or may not be either as a vadi swar or a samvadi swar.

i.e. Bahar varieties : All Bahar Varieties have Shudhdha Madhyam swar acts as a counter / turning point Swar.

"प्रबल राग निर्देशक शब्द मिश्रराग निर्देशक शब्द के अन्त में रहेगा तो इस प्रकार मिश्रराग का स्वरुप अधिक स्पष्ट होकर मिश्र राग नाम वाचक शब्द अधिक प्रभावशाली बनेगा ।" 11

For the nomenclature of Mishra Raga The name of the prominent raga will be placed at end of whole word of the Mishra Raga, which gives clear effective idea regarding mishra raga.

e.g. NatBilaval, Jayavanti Todi, Jayant malhar, Rageshri Bahar.

But This point has second opinion i.e. some time it may give wrong idea about mishra raga

e.g. Gaud Sarang; Tilak Kamod - Both are not mishra raga meaning, to say that it may give an impression from the name of the raga that it is a mishra raga but in reality it is not like that.

"मिश्रराग से प्राप्त होनेवाले भावनात्मक आधार को कभी नहीं भूलना चाहिये । क्योंकि रंजकता का महत्त्व मिश्रराग में भी असाधारण है । 12

We should not ignore an emotional values and intellectual pleasure while creating and performing a mishra raga. An emotional values an asthic pleasure and an intellectual pleasure - these are unusal elements for the mishra raga".

"मिश्ररागों के प्रस्तुतिकरण के लिये वास्तविक ज्ञान तथा मूल रागांग रागों के सूक्ष्म अंगो का अध्ययन परम आवश्यक है ।" 13

For the presentation of the mishra Raga or for the Creation of the Mishra raga a creater or a performer must have the knowledge of the basic ragang and the study for minute - deep elements."

"मिश्र राग में मिले हुए राग की छाया मूल राग पर पडती रहती है तथा एक के बाद दूसरे के आगमन से नष्ट होती रहती है । मिश्र राग में मिले हुए राग के अतिरिक्त यदा यदा, अन्य रागों की भी भ्रान्ति हुआ करती हैं ।"

उ.दा. आभोगी में इर्गा शिवरंजनी ।

ध सा रे म - ईर्गा

ध सा रे ग् - शिवरंजनी

``Obviously in mishra raga ragas which are used for mixing their impression shadow can be seen and it can be gradually removed while performnig then one by one.

Also it gives an impression of such ragas which are nearer to the particular mishra raga."

e.g. In Abhogi - Durga & Shivranjani

ध सा रे म - Durga

ध सा रे ग् - Shivranjani

"साधारण रुपसे मिश्रराग में आरोह - अवरोह के आधार पर राग समझना असंभव हैं । इसका प्रमुख कारण है कि राग प्रस्तुतिकरण के समय दोनों रागों का समान रुप से मिश्रित किया जाता हैं ।" 14

उदा. काफी कानडा

कानडा के स्वरसमूह बाद तुरन्त काफी के स्वरसमूह किये जाते है ।

रे रे सानि् सारे ग् (काफी)

मग् मग् म सारेसा (कानडा)

रे ग् म प ध प ग् रे (काफी)

म ग् म ग् म प म ग् म रे सो (कानडा) i.e. Nayaki Kanada

अन्तराः म प ध नि् सो ध नि् सा रे सो (काफी)

प नि् प नि नि प म प म ग् म ग् म नि् प (कानडा)

Generally in mishra raga the whole tonal structure (रागस्वरूप) is difficult to undestand with its Aroha Avroha The main reason is its pattern or the arrengements of the combination of two ragas, used to create such mishra raga.

For Further understading here the role of a Bandish, a tonal Structure of the particular mishra raga is very important. Because it is a replica of the raga (We have already discussed in chapter 5)

A Bandish with proper tonal pronounciation gives perfect idea of the particular mishra raga.

This is a statement of a late prof. Gindesaheb while giving a lecture at patana Nov. '85 for the music conference organised by ABGM.

with an Analysis of the Bandish the proper tonal structure of the mishra raga can be understood.

All experts whom I have interviewed have common statement.

According to Dr. (Mrs.) Sumati in her reaserch paper dated 12-12-86

हिन्दुस्तानी संगीत में रागों का संमिश्रण सादारण चर्चा

ऐतिहासिक क्रियात्मक एवं सौन्दर्यबोधी परिप्रेक्ष्य में

(attached the copy of a reaserch paper)

- ``Raga mixing is not a new phenomena"

- ``The old clasification system of raga i.e. pure, shadow and complete or mixed may be implemented for to classify, mishra raga

- "रंजकता और शोभा बढाने के लिये संमिश्रण की क्रिया की मान्यता है ।" 15

As discussed the creation of a mishra raga is allowed for to create intellectual entertainment pleasure and aesthetic pleasure.

- "किसी चीज में (किसी चीज में कसी चीज को किसी तरह मिला दें तो वह सम्यक मिश्रण नही होगा ।" 15 A

One cannot haphazardly mix any two things. It will not be a proper mixing.

This can be stated for the raga mishran. We cannot haphazardly mix any two raga which is unable to create an aesthetic and an intellectual pleasure".

According to Pt. Bhatkhande,

``The creation of a mishra raga requires following elements

(1) which type of mixing or combination

(2) Wherther there is a common swar pattern ?

(3) Where ragas are combined in mishra raga (i.e. in Aroha Avroha etc)

(4) Where ragas used for the combination can be seen ?

(3,4 - arrangement of two ragas)

In pt Bhatkhande's words :

"अमुक राग के मिश्रण से अमुक राग होता है, केवल इतना कहने से अनेक प्रश्न उथ्पन्न होते हैं । मिश्रण किस प्रकार होगा ? स्वरोमें साम्य होगा या नहीं ? साम्य की सीमा केवल वादी स्वर तक रहेगी अथवा आरोह-अवरोहक स्वरूप तक

सीमित होगी ? भिन्न-भिन्न रागों के छोटे-छोटे टुकडे रंजकत्व के लिये कहाँ मिलाये जा सकते है इत्यादि ।" 16

In coIncluding part of this chapter it can be said that a creativity of the mishra raga is endless and it is a dynamic process. It gives नवराग निर्मित to the Hindustani classical Music, Encouraging the new creaters intellectuals (Music) towards the नवराग निर्मित ।

In Generalisation ,it can be said that

(1) There are varieties of mishra raga i.e. Bilaval Kanada, Kedar, Todi kalyan,Nat, Bhairav Sarang etc.

(2) Difference Nature of Mishra raga. i.e. Nat Bhairav, Bhairav Bahar,

(3) Having Same Nature, Nat kamod, Jayant Malhar, Rageshri Bahar Adana Bahar

(4) having, a combination of Hindustani and Karnatak raga. e.g. Khemdhwani

(5) Seasonal Mishra raga (1) Vasant Bahar (2) Jayat Malhar (All malhar - Bahar Varieties)

(6) It may not be Classified under Thaat system.

(7) It cannot be understood with Aroha Avroha but can be understood with its Bandish.

(8) Every mishra raga has fixed time to perform (option seasonal raga)

(9) It requires deep intensive study of all ragangs.

(10) It must have an emotional value, an aesthetic and an intellectual pleasure. Offcourse It may not give a pleasure to general - common / listener.

(11) It encourages to study so many ragas in detail.

(12) It can be divided in four different capacities (chap. 3)